कई मोहोल पहाड़ों मिने, कई मोहोल पहाड़ों ऊपर।
जो बन पहाड़ या जिमिएं, सो इन जुबां कहूं क्यों कर।। ९ ।।

कई महल पहाड़ों के अन्दर बने हैं। कई महल पहाड़ों के ऊपर बने हैं। यहां के वन, पहाड़ या जमीन की सिफत झूठी जबान से कैसे वर्णन करूं?

ना सुख कहे जाएं जिमी के, ना सुख कहे जाएं बन।
ना सुख कहे जाएं मोहोलों के, न सुख कहे जाएं पहाड़न।। १० ।।

जमीन के, वन के, महलों के तथा पहाड़ों के सुख कहने में नहीं आते।

कई पहाड़ झिरने झिरें, कई ऊपर नेहेरें चली जाएं।
कई उतरें ऊपर से चादरें, कई तालों बीच आए समाए।। ११ ।।

कई पहाड़ों से झरने झरते हैं। कई नहरें ऊपर जाती हैं। कई जगह से पानी पहाड़ से चादरों के रूप में तालों में आकर समा जाता है।

नेहेरें बन में होए चलीं, सो नेहेरें कई मिलत।
आगूं आए मोहोल बन के, इत चली कई जुगत।। १२ ।।

कई नहरें वन से होकर एक-दूसरे से मिलती हुई चलती हैं। इसके आगे वन की मोहोलातें आती हैं जिनकी सिफत कई तरह की है।

ए सुख हमारे कहां गए, ए जो खेल होत दिन रात।
हक के साथ हम सब रूहें, हंस हंस करती बात।। १३ ।।

श्री राजजी महाराज के साथ हम सब रूहें रात-दिन यहां हंसती-खेलती, बातें करती थीं। यह हमारे सुख कहां चले गए?

।। प्रकरण ।। २४ ।। चौपाई ।। ११५४ ।।

बन के मोहोल नेहेरें

बन छाया है मोहोल जो, इत मोहोल बने बन के।
जानो सोभा सबसे अतंत है, सब सुख लेती रूहें ए।। १ ।।

मानिक पहाड़ से आगे वन की नहरें हैं जिनमें सुन्दर महल बने हैं और उन महलों पर वन की छाया है। लगता है यह शोभा सबसे अच्छी है जहां रूहें सब तरह का सुख लेती हैं।

नेहेरें सागर से खुली चलीं, सो भी भई बन माहें।
ए बन सोभा नेहेरों की, खूबी क्यों केहेसी जुबांएं।। २ ।।

सागर से नहरें खुली चलती हैं और वन के बीच में आती हैं। यहां पर इनकी शोभा अधिक बढ़ जाती है। इस खूबी का बयान यहां की जबान कैसे करे?

सागर किनारे जो बन, ए बन नेहेरें विवेक।
मोहोल बन जो देखिए, जानों सोई नेक से नेक।। ३ ।।

सागरों के किनारे के वन तथा उनके अन्दर की नहरें तथा महल जो वनों के ही हैं, देखने से एक से एक अच्छे लगते हैं।

Nijanand App

कई मोहोल ढिग सागरों, और कई मोहोल बनराए।
तिनों में नेहेरें चलें, हम सुख लेतीं इत आए।।४।।

कई महल सागरों के पास हैं जिनको बड़ी रांग की हवेलियां कहते हैं। जमीन के ऊपर वनों में कई महलों की शोभा है। इन सबमें सुन्दर नहरें चलती हैं और हम सब रूहें यहां आकर सुख लेती हैं।

ए बन नेहेरें दूर लों, जहां लों नजर फिरत।
ए सुख संग सुभान के, हम कई विध लेतीं इत।।५।।

यह वन तथा नहरें जहां तक नजर जाती है उससे भी अधिक दूर तक फैली हैं। श्री राजजी महाराज के साथ में हम रूहें यहां आकर कई तरह के सुख लेती हैं।

इन बन की और मोहोल की, और पहाड़ हिंडोले जे।
जिमी सब बराबर, अर्स लग देखिए ए।।६।।

इस वन, महलों और पहाड़ की तथा हिंडोलों की जमीन रंग महल तक समतल है।

बन बिगर की जो जिमी, जानों जरी दुलीचे बिछाए।
ए दूब जोत आसमान लों, रह्या नूरै नूर भराए।।७।।

रंग महल के पच्छिम में दूब दुलीचा है। यहां पेड़ नहीं हैं। घास का मैदान है। जिसमें घास गलीचे के समान ही शोभा देती है और जिसका तेज आसमान तक जाता है।

ए नेहेरें अति दूर लग, अति दूर देखे सागर।
सागर नेहेरें मोहोल जो, अति बड़े देखे सुन्दर।।८।।

इन नहरों की बहुत दूर तक सुन्दरता है। दूर से देखने पर यह सागर के समान प्रतीत होती हैं। सागर को, नहरों को और महलों का देखने का एक अजब नजारा है।

सागर किनारे मोहोल जो, सो जाए लगे आसमान।
ए मोहोल जुदी जुदी जिनसों, इत सुख चाहिए सागर समान।।९।।

सागरों के किनारे पर जो बड़ी राग के महल हैं, वह मानिक पहाड़ जैसे बारह हजार भोम ऊंचे हैं और आसमान को छूते हैं। यह बड़ी रांग की मोहोलातें अलग-अलग साजो सामान से बनी हैं जहां सागरों के समान बेशुमार सुख हैं।

कई मोहोल बराबर सागरों, मोहोल ऊंचे चढ़े अनेक।
कई जुगतें सोभा सुन्दर, ए क्यों कहे जुबां विवेक।।१०।।

सागरों के बराबर के महल बहुत ऊंचे हैं और कई तरह की शोभा से सुन्दर हैं। यहां की जबान से कैसे उनका वर्णन करें?

कई मोहोल सुख सागरों, कई सुख टापू मोहोल।
ए सुख अपार अलेखे, सो क्यों कहूं इनकी तौल।।११।।

सागरों के अन्दर सुन्दर टापू महल बने हैं जो बड़ी रांग की मोहोलातों के समान ही ऊंचे सुख साधनों से भरे हैं। इनकी उपमा कैसे समझाऊं?

Nijanand App

महामत कहे सुनो मोमिनों, बीच टापू जल गिरदवाए।
ए अति ऊंचे मोहोल सुन्दर, देखो अपनी रूह जगाए।। १२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! सुनो, सागरों के अन्दर बारह हजार की बारह हजार हारें टापुओं की हैं जिनके चारों तरफ जल है। यह टापू महल बहुत ऊंचे और बहुत सुन्दर हैं। अपनी रूह को जगाकर देखो।

॥ प्रकरण ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ ११६६ ॥

पुखराज से पाट घाट तांईं
(पुखराज पहाड़ से पाट घाट तक)

सुख क्यों कहूं पहाड़ पुखराज के, और कहा कहूं मोहोल तले।
ऊपर चौड़े मोहोल चढ़ते, मोहोल तीसरे तिन उपले।। १ ।।

पुखराज पहाड़ के सुखों का कैसे वर्णन करूं? इसके नीचे कैसे सुन्दर महल बने हैं जो नीचे से संकरे और ऊपर चढ़ते-चढ़ते (दो सौ पचास) भोम तक चौड़े हो गए हैं। उसी के ऊपर इसके तीन गुनी (७५०) भोम आती है।

आठ पहाड़ तले मोहोल के, ऊपर ताल पुखराज।
कई मोहोलातें आठों पर, ऊंचे रहे मोहोल बिराज।। २ ।।

पुखराज पहाड़ के नीचे तलहटी में आठ पहाड़ों की शोभा दिखाई देती है। पांच तलहटी के पेड़, दो घाटी के और एक बंगलों का, बंगलों के ऊपर पुखराज ताल की शोभा है। इन पहाड़ों पर बड़ी ऊंची-ऊंची मोहोलातें शोभा देती हैं।

ताल ऊपर मोहोलात जो, आठ पहाड़ तले जो इन।
मोहोल उपले आकास लों, किया निपट नूर रोसन।। ३ ।।

पुखराज ताल के ऊपर की मोहोलातें तथा उसके नीचे के आठ पहाड़ और ऊपर आकाशी महल के नूर की बेशुमार शोभा है।

निपट बड़े मोहोल पहाड़ के, निपट बड़े दरबार।
कब सुख लेसी इनके, ए धनी तुमहीं देवनहार।। ४ ।।

पुखराज पहाड़ में बड़े-बड़े महल बने हैं तथा बड़ी-बड़ी पड़सालें (देहलान) बनी हैं। धनी इनके सुख आप ही देने वाले हैं यह हमें कब मिलेंगे?

इत बड़े जानवर खेलत, आगूं बड़े दरबार।
ए सुख कब हम लेयसी, मोमिन इत इंतजार।। ५ ।।

इन बड़ी-बड़ी देहलानों के आगे जानवर कई तरह के खेल करते हैं। हम मोमिन यहां इन्तजार कर रहे हैं कि वह सुख हमें फिर कब मिलेंगे?

कई रंगों कई विध खेलत, पहाड़ से सेत फील।
दम न रहें मासूक बिना, धनी क्यों डारी बीच ढील।। ६ ।।

पहाड़ से सफेद हाथी कई कलाओं से कई तरह के खेल करते हैं। हे श्री राजजी महाराज! अब देरी क्यों कर रहे हो? हम आपके बिना एक पल नहीं रह सकते।

Nijanand App